00302

POST GRADUATE CERTIFICATE IN BANGLA-HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2015

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

***नोट : सभी** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

1. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग **300** शब्दों में दीजिए : **2x10=20**

   (a) हिन्दी और बांग्ला के पारस्परिक सम्बन्धों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

   (b) बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद की परंपरा पर प्रकाश डालिए।

   (c) बांग्ला और हिन्दी में लिंग सम्बन्धी अन्तर को सोदाहरण समझाइए।

   (d) बांग्ला में प्रत्यय के प्रयोग से शब्द-रचना की विभिन्न स्थितियों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

   (e) बांग्ला और हिन्दी के क्रिया-पदों के विन्यास पर तुलनात्मक रूप से प्रकाश डालिए।

2. निम्नलिखित बांग्ला पदों/शब्दों का हिन्दी पर्याय बताइए : 5

   তুষার, ঘাম, পাবস, ক্ষুধা, ধুপ, মাছিল, আইন,কাপড়, মোটামুটি, তাড়াতাড়ি

3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए : 5
विचार, जातीय, अध्यक्ष, ससुर, कमीज, बीस, चम्मच, गुड्डा, सफेद, कमरा

4. निम्नलिखित हिन्दी मुहावरों-लोकोक्तियों में से **किन्हीं पाँच** के बांग्ला समतुल्य बताते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 15

(a) अधजल गगरी छलकत जाए
(b) चट मँगनी, पट ब्याह
(c) गड़े मुर्दे उखाड़ना
(d) का वर्षा जब कृषि सुखाने
(e) खिचड़ी पकाना
(f) जैसा बोओगे, वैसा काटोगे
(g) विनाशकाले विपरीत बुद्धि
(h) मुंह में राम बगल में छुरी
(i) नौ दो ग्यारह होना

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं तीन** अनुच्छेदों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 3x15=45

(a) शान्तिनिकेतन विद्यालये शिक्षकतार एक बछर पूर्ण हवार पूर्वेई थेमे याय सतीशचन्द्रेर विश्वतानें बाँधा जीवनगान। तखन पौष उत्सवेर पर विद्यालये एक मास शीतेर छुटि हत। सेई छुटितें दिनेन्द्रनाथ ओ आरओ कयेकजनेर सङ्गे सतीशचन्द्र गियेछिलेन दिल्ली, आग्रा, गया परिभ्रमने। फेरार पथे ज्वरे पड़ेन। शान्तिनिकेतने तखन अध्यापक छात्र तेमन केउ नेई। एकमात्र व्यतिक्रम भारप्राप्त अध्यापक राजेन्द्रनाथ बन्द्योपाध्याय, ताँर सहकारी-कर्मी कोदो माहातो ओ वृद्ध माली हरिश। असुस्थ सङ्गीर परिचर्याय थेके यान दिनेन्द्रनाथ। किन्तु तिनिओ ज्वरे पीड़ित

হলে কলকাতা থেকে টেলিগ্রাম পেয়ে চলে যান জোড়াসাঁকোয়। সেই সময় সতীশচন্দ্র আক্রান্ত হন বসন্তরোগে।

ভ্রমণশেষে ফিরে এসে সতীশচন্দ্র দু'খানি চিঠি লিখেছিলেন বন্ধু অজিতকুমার চক্রবর্তী ও গুরুদেব রবীন্দ্রনাথকে, বিস্ময়! দু'খানি চিঠির একটিতেও নেই তাঁর অসুস্থতার সামান্য উল্লেখ। বরং কলকাতায় রবীন্দ্রনাথকে আবেগবিহ্বল অন্তরে লিখিত চিঠির সঙ্গে পাঠান তাঁর লেখা শেষ কবিতা 'তাজমহল'। কবিকে জানান, 'আমি এই চিঠিতে তাজমহল বলিয়া একটি কবিতা পাঠাইতেছি। এটা এখানে আসিয়া লিখিয়াছি।'

(b) যাদব মুখুয্যে আর মাধব মুখুয্যে যে সহোদর ছিলেন না, সে কথা নিজেরা ত ভুলিয়াই ছিলেন, বাহিরের লোকও ভুলিয়াছিল। দরিদ্র যাদব অনেক কষ্টে ছোটভাই মাধবকে আইন পাশ করাইয়াছিলেন এবং বহু চেষ্টায় ধনাঢ্য জমিদারের একমাত্র সন্তান বিন্দুবাসিনীকে ভ্রাতৃবধূরূপে ঘরে আনিতে সক্ষম হইয়াছিলেন। বিন্দুবাসিনী অসামান্য রূপসী। প্রথম যেদিন সে এই অতুল রূপ ও দশ সহস্র টাকার কাগজ লইয়া ঘর করিতে আসিয়াছিল, সেদিন বড়বৌ অন্নপূর্ণার চোখে আনন্দাশ্রু বহিয়াছিল। বাড়িতে শাশুড়ী-ননদ ছিল না, তিনিই ছিলেন গৃহিণী। ছোটবধূর মুখখানি তুলিয়া ধরিয়া প্রতিবাসিনীদের কাছে সগর্বে বলিয়াছিলেন, ঘরে বৌ আনতে হয় তো এমনি। একেবারে লক্ষ্মীর প্রতিমা। কিন্তু দুদিনেই তাঁহার এ ভুল ভাঙ্গিল। দুদিনেই টের পাইলেন, ছোটবৌ যে ওজনে রূপ ও টাকা আনিয়াছে, তাহার

চর্তুগুণ অহঙ্কার-অভিমানও সঙ্গে আনিয়াছে।
একদিন বড়বৌ স্বামীকে নিভৃতে ডাকিয়া বলিলেন, হাঁ গা, রূপের আর টাকার পুঁটুলি দেখে ঘরে বৌ আনলে, কিন্তু এ যে কেউটে সাপ!
যাদব কথাটা বিশ্বাস করিলেন না। মাথা চুলকাইয়া বার-দুই 'তাই ত' 'তাই ত', করিয়া কাছারি চলিয়া গেলেন।

(c) ঘরটা ছোট, নিচু, ওপরে টিন, চারপাশে পাঁচ ইঞ্চি দেয়াল; এটাই তাদের রান্নাঘর, এটাই তাদের শোবার, ঘরের অর্ধেকটা জুড়েই এই ছোট্ট চকি, অপর পাশে কেরোসিনের চুলা, হাঁড়িকুড়ি, জামাকাপড় টাঙানোর একটা দড়ি ঝুলছে দেয়াল ঘেঁষে, মশারীর দুই প্রান্ত মাথার দিকে আটকানোই থাকে, এই ঘরের এক দিকে একটা ছোট্ট জানালাও আছে। সেই জানালা দিয়ে বৈশাখী সকালের ঝলমলে আলোও আসছে ঘরের ভেতরের অন্ধকারের সঙ্গে একটা মুল্লযুদ্ধ চালাতে। সে আলোয় দেখা যায় দেয়ালে সাঁটা সিনেমার পোস্টারে সাকিব খান ও অপু। এক পাশে একটা আয়না ঝুলছে, তার নিচেই একটা পেরেক গাঁথা ঝুড়িতে চিরুনি, ফিতা, ফেয়ার এন্ড লাভলি। ঘরের পাশের গলিতে বস্তির ছেলেমেয়েরা হৈচৈ করছে, সেই হল্লা ভেদ করে আসছে কাকের তীব্র কা-কা ডাক। বিজলির বুকটা কেঁপে ওঠে। এমনিতেই তার শরীর ভালো নয়, পেটটা একেবারে ধামা হয়ে আছে, রোগা পা দুটোর ওপরে এই আট-মাসের গর্ভের ভার নিয়ে সে ঠিকমতো হাঁটতে পারে না, চলতে পারে না; তাকে শ্বাস নিতে হয় জোর করে। তার কষ্ট হয়। তার উপরে যদি এইভাবে কাউয়ায় ডাক পাড়ে, বুকটা ধরাস করি উঠে কিনা কন।

(d) এতদিন জ্বরের পর আমার মস্তকের ঘন কুন্তলরাশি একান্ত বিরল হইয়াছিল। একদিন আমার অষ্টমবর্ষীয়া কন্যা আসিয়া জিজ্ঞাসা করিল, 'বাবা, দ্বীপ কাহাকে বলে?' আমার কন্যা ভূগোল-তত্ত্ব পড়িতে আরম্ভ করিয়াছিল। আমার উত্তর পাইবার পূর্বেই বলিয়া উঠিল, 'এই-দ্বীপ'-ইহা বলিয়া প্রশান্ত সমুদ্রের ন্যায় আমার বিরল-কেশ মসৃণ মস্তকে দুই-এক গোছা কেশের মন্ডলী দেখাইয়া দিল।

তারপর বলিল, 'তোমার ব্যাগে এক শিশি ''কুন্তল-কেশরী'' দিয়াছি, জাহাজে প্রত্যহ ব্যবহার করিও। নতুবা নোনা জল লাগিয়া এই দুই-একটি দ্বীপের চিহ্নও থাকিবে না।'

'কুন্তল-কেশরী'র আবিষ্কার এক রোমাঞ্চকর ঘটনা। সার্কাস দেখাইবার জন্য বিলাত হইতে এদেশে এক ইংরেজ আসিয়াছিল। সেই সার্কাসে কৃষ্ণ কেশরভূষিত সিংহই সর্বাপেক্ষা আশ্চর্য দৃশ্য ছিল। দুর্ভাগ্যক্রমে জাহাজে আসিবার সময় আণুবীক্ষণিক কীটের দংশনে সমস্ত কেশরগুলি খসিয়া যায় এবং এদেশে পৌঁছবার পর সিংহ এবং লোমহীন কুকুরের বিশেষ পার্থক্য রহিল না। নিরুপায় হইয়া সার্কাসের অধ্যক্ষ এক সন্ন্যাসীর শরণাপন্ন হইল এবং পদধূলি লইয়া জোড়হস্তে বর প্রার্থনা করিল। একে ম্লেচ্ছ, তাহাতে, সাহেব! ভক্তের বিনয় ব্যবহারে সন্ন্যাসী একেবারে মুগ্ধ হইলেন এবং বরস্বরূপ স্বপ্নলব্ধ অবধৌতিক তৈল দান করিলেন। পরে উক্ত তৈল 'কুন্তল-কেশরী' নামে জগৎ-বিখ্যাত হইয়াছে। তৈল প্রলেপে এক সপ্তাহের মধ্যেই সিংহের লুপ্ত কেশর গজাইয়া উঠিল। কেশহীন মানব এবং তস্য

ভার্যার পক্ষে উক্ত তৈলের শক্তি অমোঘ। লোকহিতার্থেই এই শুভ সংবাদ দেশের সমস্ত সংবাদপত্রে প্রকাশিত হয়। এমনকি, অতি বিখ্যাত মাসিক পত্রিকার সর্বপ্রথম পৃষ্ঠায় এই অদ্ভূত আবিষ্কার বিঘোষিত হইয়া থাকে।

(e) আসলে আমার মা চাইতেন, আমি ডাক্তার হই। অন্যদিকে আমার বাবা আর দিদির ইচ্ছে ছিল আমি অভিনয় বা মডেলিং করি। আমি আদর্শ সন্তান, তাই দুটোই করে ফেলেছি! আমি কিন্তু মায়েরই বেশি কাছের। এই যে ক'দিন বাড়িতে (বিজনৌর)কাটিয়ে এলাম, ডায়েট টায়েট সব ভুলে চুটিয়ে মায়ের রান্না করা বিরিয়ানি খেয়েছি। আমরা পাঁচ ভাই এক বোন, কিন্তু সবাই প্রায় দেশের বাইরে । বাবা-মা একলাই থাকেন তো, মা'র শরীরও খারাপ, তাই ওখানে গেলে ডাক্তার দেখানো থেকে শুরু করে সবকিছু আমাকেই করতে হয়। ডাক্তারি আর মডেলিং একসঙ্গে সামলাতে একটা সময় কিন্তু খুব কষ্ট করতে হয়েছে। তখন তো এতই-মেলের রমরমা ছিল না। আর আমাদের কলেজের হোস্টেলে থেকে যখন-তখন বেরনোর বা গাড়ি-বাইক রাখারও নিয়ম ছিল না। আমি একটা মোটরবাইক কিনেছিলাম। সেটা রাখা থাকত হাইওয়ের উপর একটা ধাবাতে। দারোয়ানকে কিছু টাকা দিয়ে ম্যানেজ করেছিলাম। পিছনের পাঁচিল টপকে, বাইকে চড়ে সারাদিন বিভিন্ন অ্যাড এজেন্সিতে গিয়ে-গিয়ে নিজের পোর্টফোলিও জমা দিতাম,পার্সোনালি। প্রায় 200 কিমি বাইক চালাতে হত রোজ!

6. निम्नलिखित में से **किसी एक** अनुच्छेद का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 10

(a) महादेवी वर्मा की गिनती आधुनिक हिन्दी के महत्वपूर्ण कवियों में होती है। वे हिन्दी कविता की स्वच्छंदतावादी धारा छायावाद के चार स्तंभों में से एक थीं। अन्य तीन स्तंभ थे-जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सुमित्रानंदन पंत। लेकिन महादेवीजी सिर्फ एक साहित्यकार नहीं थीं। उन्होंने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया था। स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा के लिए वे जीवन-भर संघर्ष करती रहीं और स्त्रियों की शिक्षा के क्षेत्र में भी उनकी सेवाएं उल्लेखनीय हैं।

महादेवीजी का जन्म 24 मार्च 1907 को हुआ था। उनका जन्मस्थान पश्चिमी उत्तरप्रदेश का शहर फर्रुखाबाद है। उनके पिता गोविंदप्रसाद पेशे से वकील थे। मां का नाम था हेमरानी। दो भाइयों और दो बहनों में वे सबसे बड़ी थीं। उनकी प्रारंभिक शिक्षा जबलपुर (म.प्र.) में हुई, लेकिन सात-आठ साल की छोटी-सी उम्र में ही उनका विवाह इंदौर में स्वरूपनारायण वर्मा से कर दिया गया। स्वरूपनारायण उस समय लखनऊ में पढ़ रहे थे। महादेवीजी ने भी अपने माता-पिता के पास रहकर पढ़ाई जारी रखी और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इलाहाबाद चली गईं। वहीं से 1929 में उन्होंने बी.ए. और 1933 में संस्कृत विषय लेकर एम.ए पास किया। इसके बाद वे अपने पति के पास चली गईं, पर उनके साथ अपने बाल-विवाह को उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया। फलतः उनकी सहमति से ही उन्होंने इलाहाबाद को अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

अपने बाल-विवाह से महादेवीजी विद्रोहिणी हो गईं। उन्होंने स्त्रियों को जागरूक बनाने के लिए प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना की। इस विद्यापीठ में स्त्रियों को हिन्दी भाषा के माध्यम से साहित्यिक व सांस्कृतिक शिक्षा देने की व्यवस्था की गई।

(b) एक राजा को भाँग खाने की आदत थी। वह शाम को भाँग का एक बड़ा गोला खाता। अपने खास नौकर को उसने आदेश दे रखा था कि मैं तो नशे में रहूँगा, तुम मुझे रात को हर रोज एक पाव मलाई खिलाया करना। नौकर ने सोचा कि राजा नशे में रहता है, तो आधा पाव खुद खा लेता और आधा पाव राजा के मुँह में डाल देता। कुछ दिनों बाद राजा को लगा कि मुझे पूरी मलाई नहीं मिलती और यह नौकर गड़बड़ करता है। उसने उस नौकर पर निगरानी के लिए एक नौकर और रख दिया। वे दोनों एक हो गये। पौन पाव मलाई दोनों खा जाते और एक छटाँक राजा को खिला देते। कुछ दिनों बाद राजा को फिर शक हुआ कि दोनों बेईमानी करते हैं और उसने तीसरा आदमी उन पर निगरानी के लिए रख दिया। अब राजा को कुल आधा छटाँक मलाई मिलने लगी। बाकी वे तीनों नौकर खा जाते। राजा ने इस गड़बड़ को रोकने के लिए पाँचवाँ और फिर छठा नौकर रखा। इन लोगों ने सोचा कि यह तो नशे में रहता है, इसलिए थोड़ी-सी मलाई उसकी मूँछों पर चुपड़कर बाकी मलाई वे लोग बाँट खाते। यही हो रहा है। जनता की मूँछ पर मलाई लगायी जा रही है और सारी मलाई बीच के लोग खा रहे हैं।